सुधा ओम ढींगरा के उपन्यास 'नक़्क़ाशीदार केबिनेट' में नारी चेतना

डॉ॰ सागरिका महांति

सार-संक्षेप - हिंदी साहित्य जगत में सुधा ओम ढींगरा का नाम किसी परिचय की मोहताज नहीं है | सुधा जी का साहित्य नारी जीवन के विविध पहलुओं को छूता हुआ उसकी पीड़ा को वाणी देता है | आज की चेतना संपन्न नारी उस पर हो रहे अन्याय एवं अत्याचार का मुँहतोड़ जवाब देने के लिए सामर्थ्य रखती है | इस संदर्भ में सुधा जी का प्रस्तुत उपन्यास 21वीं सदी में जागरूक नारी का प्रतिनिधित्व करती है | उपन्यास के माध्यम से जहाँ एक तरफ नशे में लिपटे पंजाब, आतंकवादियों से उलझते पंजाब, तत्कालीन खालिस्तान आंदोलन, ऑपरेशन ब्लू स्टार, इंदिरा गाँधी की हत्या और उसके बाद के दंगे, हिंदु-सिख वैमनस्य, कोहिनूर हीरा एवं अमृतसर के स्वर्ण मंदिर की जानकारी पाठकों को मिलती है वहीं दूसरी ओर उपन्यास की नायिका सोनल के माध्यम से नारी अस्मिता की लड़ाई का यथार्थ चित्रण भी हुआ है | शोषण के प्रति विद्रोह की भावना, जीवन के प्रति नवीन दृष्टिकोण एवं नारी सुरक्षा के प्रति सचेतन आदि को दर्शाकर लेखिका ने नारी के मन, सोच-समझ एवं जरूरतों को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है, जिससे नारी को लेकर वर्तमान समय में समाज के साथ-साथ स्वयं नारी की दृष्टि बदल रही है |

मूल शब्द - चेतना, नारी शोषण, सामाजिक व्यवस्था, मानवीयता, नारी सुरक्षा

प्रस्तावना - अपने लेखन व उसके माध्यम से प्रवासी दुनिया के अकेलेपन और ऊब एवं अन्य समस्याओं पर बड़ी बेबाकी से लिखने वाली सुधा ओम ढींगरा का नाम हिंदी के पाठकों के लिए अपरिचित नहीं है | सुधा जी का साहित्य नारी जीवन के विविध पहलुओं को छूता हुआ उसकी पीड़ा को वाणी देता है | डॉ॰ ज्योति गोगिया के शब्दों में "सुधा जी भारतीय मिथकीय नारी पात्रों के माध्यम से वर्तमान नारी-स्वर को उभरती है | कभी उनकी कमजोरियों को ललकार कर, कभी उनके भीतर छिपी शक्ति को पहचानकर और कभी कमज़ोर करने वाली परिस्थितियों में नारी पुरुष के बीच खड़ी की गई असमानता को वह असामान्यता का नाम देती है |"[1] नारी को लेकर वर्तमान समय में समाज के साथ-साथ स्वयं नारी की दृष्टि बदल रही है | वह किसी खूँट में बंधे हुए मवेशी की तरह जीवन न बिताकर अपनी इछानुसार स्वाबलंबी जिंदगी बिताना पसंद करती है | उस पर हो रहे अन्याय एवं अत्याचार का वह मुँहतोड़ जवाब देने के लिए

सामर्थ्य रखती है | इस संदर्भ में सुधा जी का प्रस्तुत उपन्यास 21वीं सदी में जागरूक नारी का प्रतिनिधित्व करती है |

नारी चेतना से अभिप्राय समाज की एक इकाई के रूप में नारी की व्यक्तिसत्ता की प्रतिष्ठा तथा स्वाधिकारों के प्रति सजगता है | समाज की एक इकाई के रूप में 'अपने होने के एहसास' से ही अस्तित्व की पहचान होती है | परंतु नारी को अपना अस्तित्व, व्यक्तित्व एवं अस्मिता की प्रतिष्ठा के लिए सदियों से हर पल संघर्ष करना पड़ा है | इतिहास साक्षी है कि प्रत्येक युग में किसी न किसी बहाने स्त्री का शोषण होता आया है | पुरुष ने नारी को अपने अधीन रखने के लिए तरह-तरह के रीति-रिवाज, सामाजिक मान्यताएँ आदि का निर्माण किया | नारी के लिए वास्तविक अनुभव के स्थान पर एक आदर्श स्थापित कर दिया गया और इस आदर्श के मिथ में वह जीने के लिए अभिशप्त रहती आई है | जिस नारी को आदर्श के साँचे में ढाल दिया गया था, चेतना संपन्न होने पर आज वह उससे बाहर निकालने के लिए तीव्र प्रयास कर रही है | एक नारी होने के नाते सुधा जी ने नारी के मन, सोच-समझ एवं जरूरतों को जिस प्रकार अपने लेखन के माध्यम से उजागर किया है वह कल्पना मात्र न होकर यथार्थ कह रही होती है |

सुधा जी का प्रस्तुत उपन्यास असल में एक देश की कथा होते हुए भी एक मानसिकता की कहानी है | इसकी कथा लेखिका की जन्मभूमि भारत और कर्मभूमि अमेरिका में फैली हुई है | कहानी के माध्यम से सुधा जी का यह प्रयास रहा है कि दो अलग-अलग परिवेश एवं संस्कृति में क्या समानता है और अमेरिका हमसे कहाँ-कहाँ तक मानसिक स्तर पर अलग है, इस बात की खोज की गई है | डॉ॰ अमिता के शब्दों में "सुधा जी का यह उपन्यास मूल रूप में पंजाब प्रांत के एक परिवार और उसके साथ उसके परिवेश के बनते-बिगड़ते रिश्तों की कथा है, जिसमें नारी संघर्ष बड़े प्रभावशाली रूप में उभरा है | नारी संघर्ष में सोनल और मिनल की कहानी बड़े मर्मस्पर्शी रूप में उपन्यास के पृष्ठों पर रूपायित है | इसके साथ ही पंजाब से विदेश की ओर आकर्षण जाल में फँसी नारियों के विवाह के चक्रव्यूह को उपन्यासकार ने बड़ी सच्चाई से उतारा है |"[2] प्रस्तुत उपन्यास के माध्यम से जहाँ एक तरफ नशे में लिपटे पंजाब, आतंकवादियों से उलझते पंजाब, तत्कालीन खालिस्तान आंदोलन, ऑपरेशन ब्लू स्टार, इंदिरा गाँधी की हत्या और उसके बाद के दंगे, हिंदु-सिख वैमनस्य, कोहिनूर हीरा एवं अमृतसर के स्वर्ण मंदिर की जानकारी पाठकों को मिलती है वहीं दूसरी ओर उपन्यास की नायिका सोनल के माध्यम से नारी अस्मिता की लड़ाई का यथार्थ चित्रण भी हुआ है |

शोषण के प्रति विद्रोह की भावना - मनुष्य में असंतोष या अतृप्ति की भावना के कारण विद्रोह जन्म लेता है | विद्रोह के कारण ही मनुष्य को अपनी वास्तविक स्थिति का एहसास

होता है एवं इसका सूत्रपात एक ही दिन या एक ही क्षण में नहीं होता है | यह तो वर्षों से संचित वेदना का उद्‌गार मात्र है | भारतीय समाज में नारी का जितना शोषण हुआ है, उतना संभवतः अन्य किसी समाज में नहीं हुआ होगा | अधिकारहीन एवं महत्वहीन जीवन के कारण ही नारी शारीरिक एवं मानसिक रूप से शोषित होती आ रही है | आज उसकी स्थिति में मूलभूत परिवर्तन हुए हैं |

नारी को यह एहसास होने पर कि जब तक वह पुरुष द्‌वारा हो या स्वयं के कारण ही उसका शोषण होता रहे, तब तक वह कभी विकास नहीं कर पाएगी | अतः नारी ने अपने आंतरिक शक्ति को पहचाना तथा वस्तुस्थिति को समझते हुए उस पर हो रहे अन्याय एवं अत्याचार के खिलाफ़ डटकर दृढ़ता के साथ सामना करने लगी | 21वीं सदी में नारी के इस रूप को काफ़ी सराहा गया है | इस संदर्भ में रेणु गुप्ता लिखती है “सदियों से नारी समाज, पुरुष, धर्म सभी के द्‌वारा शोषण का शिकार होती है | आज उसकी स्थिति में मूलभूत परिवर्तन हुए हैं | समाज में नारी को देखने वाली दृष्टि परिवर्तित हुई है | धार्मिक विश्वासों और स्त्री की चारित्रिक नैतिकता के प्रति भी दृष्टिकोण में परिवर्तन अवश्य दिखाई देता है | आज पति को परमेश्वर न मानने वाली नारी स्वयं को मानव रूप में परिवर्तित करने के लिए संघर्षरत है | वह सब कुछ नियति मानकर स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है | xxxxxx आज की नारी पति, पिता या किसी के भी जुल्म को नियति मानने में विश्वास नहीं करती | वह इस शोषण के विरुद्‌ध आवाज़ उठाती है, जहाँ तक उसकी सामर्थ्य है, जब तक वह उसका विरोध कर सकती है, करती है |”[3]

बचपन से ही नारी को पुरुष के प्रति समर्पण की भावना रखने की तालिम दी जाती है, उसे यह बतया जाता है कि उसका उद्‌धार इसमें है कि वह पुरुष के प्रति पूर्ण समर्पित रहे | उसे दया, क्षमा, त्याग, करुणा, परोपकार आदि गुणों का पाठ पढ़ाया जाता है, ताकि वह पितागृह हो या पतिगृह में अपना दायित्वों का उचित निर्वाह कर सके | किंतु 21वीं सदी में नारी को यह सब मंजूर नहीं है | उसे पिता, पति और पुत्र पर आश्रित रहकर उनके अत्याचारों को सहना नहीं है | उपन्यास ‘नक़्क़ाशीदार केबिनेट’ में सोनल की शादी रुपए-पैसों की लालच में कर दी जाती है और उसका पति उसे बेचकर और ज्यादा पैसे कमाने की योजना भी बनाता है | जैसे ही सोनल को अपने पति बलदेव की इस काले कारनामे का पता चलता है वह उसे और उसके साथियों को पकड़वाने के लिए दृढ़ निश्चय करती है | वह और लड़कियों के जीवन तबाह होने से बचाना चाहती थी | वह कहती है “बलदेव को पकड़वाने की प्रक्रिया में अगर मेरी मौत हो जाती है, तो मैं भाग्यशाली हूँगी | मेरी आत्मा शांति से यह शरीर छोड़ सकेगी |”[4] मनोचिकित्सक हरेंद्र रावल के शब्दों में नारी चेतना यह है कि “आज की शिक्षित नारियाँ प्रतिकूल परिस्थितियों में भी समाधान का रास्ता ढूँढ़ लेती है | वह बीती हुई बात या घटना पर ज्यादा सोच विचार

नहीं करती, बल्कि आगे बढ़ जाती है | चेतना स्तर पर सशक्त होने के कारण वह भाव के बहाव में बहती नहीं है | असहाय परिस्थितियों में भी विचलित नहीं होती एवं अपनी बात को खुल कर प्रकट करने में हिचकिचाती नहीं है |" सोनल भी कुछ इस तरह की मानसिकता रखती है | अपने परिवारवालों से मिली धोखा, सगे-संबंधियों के अत्याचार एवं पति तथा ससुराल वालों के शोषण के वबाजूद वह टूटती नहीं बल्कि मानसिक रूप से और शक्तिशाली बन जाती है | वह सोचती है "मेरी जान के तो वैसे ही अनगिनत दुश्मन हैं | एक दिन वे मुझे मार ही देंगे | उनके हाथों मर कर मेरी रूह भटकेगी | बिना कुछ किए दुनिया से चले जाना भी कोई जाना होता है | जिंदा होते हुए, किसी की मदद नहीं की | किसी का भला नहीं किया | रूह को चैन नहीं आयेगा |"[5]

जीवन के प्रति नवीन दृष्टिकोण - नारी जगत जागरूक होने लगी है | जीवन के प्रति वह सकारात्मक दृष्टि रखती है | अपने भविष्य को लेकर चिंतित जरूर है पर वर्तमान को नष्ट करना उसे मंजूर नहीं है | जीवन में वर्तमान के मूल्य को वह अच्छी तरह से समझती है | उपन्यास 'नक्काशीदार कैबिनेट' में लेखिका सुधा ढींगरा का कहना है "भविष्य की चिंताओं में मनुष्य वर्तमान को जीना भूल जाता है और स्वयं का जीवन दूभर कर लेता है | xxxxx जिस दिन मानव वर्तमान में जीना सीख लेगा, बहुत सी परेशानियों और चिंताओं से मुक्त हो जाएगा |"[6] लेखिका के उक्त कथन नारी में एक नवीन चेतना को उजागर करने में समर्थ है | वह पारंपरिक ढंग से 'अधीनस्थ प्राणी' बनकर अपनी जिंदगी न बिताकर स्वछंद रूप से जीवन का उचित मूल्य समझकर जिंदगी बिताना चाहती है |

निरंतर संघर्ष ने नारी को एक महानुभावी बना दिया है | आज नारी इतनी सशक्त बन गई है कि वह किसी समस्या से घबराती नहीं है | जीवन में खुश रहने की मंत्र को उसने ढूँढ निकाला है | उपन्यास की नायिका सोनल ऐसी ही थी | "जीने की चाह से भरपूर | जीवन ने उससे खुशियाँ छीनीं | पर वह खुश रही | xxxxxx इस देश में उसने अपने अस्तित्व को तलाशा और अपने पाँव पर खड़ी होकर, उन सबसे अपने हिस्से की खुशियाँ वापिस लीं; जिन्होंने जवानी और बचपन में उससे वे छीन ली थी |"[7] लेखिका के लिए सोनल नारी सशक्तिकरण का जीवंत उदाहरण थी | आज की नारी पलायन के जगह जीवन के समस्याओं का सामना कर रही है | जिंदगी के साथ वह समझौता करना नहीं चाहती है |

नारी सुरक्षा के प्रति सचेतनता - वर्तमान समय में नारी की सुरक्षा एवं इससे संबंधित विविध मुद्दों पर समग्र देश-दुनिया में विचार विमर्श हो रहा है | भले ही आज हम आधुनिक युग में जी रहे हैं, जहाँ महिलाएँ तमाम बंदिशों को तोड़कर अपने लक्ष को हासिल कर रही हैं, वहीं दूसरी तरफ यह भी रिपोर्ट बताती है कि उनकी सुरक्षा में बड़ा अभाव है | घर-परिवार,

कार्यक्षेत्र, सार्वजनिक स्थल आज कहीं भी वह सुरक्षित नहीं है | मानव विकास रिपोर्ट के अनुसार "ऐसा एक भी समाज नहीं है जहाँ स्त्रियाँ सुरक्षित हों या उन्हें पुरुषों के साथ बराबरी की दर्जा प्राप्त हो, असुरक्षा उनकी पीछा पालने से लेकर कब्र तक करती है |"[8] 21वीं सदी की नारी समस्याओं में से मुख्य समस्या है 'मानव तस्करी' | वर्ष 2014-2016 के दौरान भारत में 13,834 महिलाएँ मानव तस्करी का शिकार हुईं | ज्यादातर उन्हें देह व्यवसाय, अंग बेचने के कारोबार या अपराधिक कार्यों में शामिल किया जाता है | सुधा जी ने प्रस्तुत उपन्यास के माध्यम से इस समस्या का उजागर किया है एवं इसके प्रति नारी को सचेतनशील बनाया भी है | सोनल के माध्यम से उन तमाम लड़कियों को सावधान कराया है जो लोग बिना सोचे-समझे अमेरिका में शादी करने के झांसे में आ जाती हैं जबकि उन्हें वहाँ ले जाकर देह व्यापार और नशे की धंधा में व्यवहार किया जाता है | "अधिकतर लड़कियों को बाहरी दुनियाँ के बारे में ज्यादा पता नहीं होता है | देह व्यापार से अधिक वे लोग उनसे नशे का धंधा करवाते | उनके द्वारा एक देश से दूसरे देश में नशे पहुंचाए जाते | नशे उनके अंगों में भर दिये जाते थे | अगर किसी देश में कोई लड़की पकड़ी जाती, तो उस देश का कानून उसे सज़ा देता | वह उम्र भर वहाँ की जेलों में पड़ी रहती | जिंदा होकर भी मुरदों से जिंदगी जीती | ऐसा अभिशापित जीवन जीने के लिए वह मजबूर होती | गाँव की सरल-मासूम लड़कियाँ पकड़े जाने पर कुछ भी बताने में असमर्थ रहतीं, क्योंकि उन्हें किसी बात की जानकारी तो होती नहीं |"[9] उपन्यास में सोनल भी इसका शिकार होती है परंतु अपनी साहस एवं दृढ़ मनोबल से मानव तस्करी गिरोह का पर्दाफाश करके अनेक लड़कियों की जिंदगी नष्ट होने से बचा लेती है |

निष्कर्ष - सुधा जी का साहित्य स्त्री-विमर्श व स्त्री शक्ति के समस्त पहलुओं का दस्तावेज है | इन्होंने इस मुद्दे को केवल उठाया ही नहीं बल्कि इसके बेबाक हल भी प्रस्तुत किया है | इनकी नारी पात्र जागरूक है, सचेत है, समझदार है, स्वाभिमानी भी है | उसे ज़रा भी संदेह नहीं, वह स्पष्ट है | वह जानती है कि ये दुनिया उससे है, न वह दुनिया से है | सुधा जी का नारी चेतना संबंधी दृष्टिकोण यह बयान करता है कि "प्राचीन समय में स्त्री ही घर-समाज की प्रमुख थी | वह इस प्रक्रिया को भी जान चुकी है कि उसे इस सत्ता से षडयंत्र के अंतर्गत दूर किया गया | फिर भी वह चिल्लाती-चीखती नहीं | वह स्वयं के सम्मान पर आँच आने तक ही चुप रहती है | अपने स्वाभिमान पर बात आने पर वह पुरुष को उसके अपने ही जाल में फंसा छोड़ स्वयं को उससे मुक्त कर लेने की अदम्य प्रयास करती है |" सुधा जी जिस बेबाकी से आज की नारी के मन, सोच-समझ व जरूरतों पर लिखती है, तो वह केवल कल्पना मात्र नहीं है, वह तो यथार्थ कह रही होती है | नारी की बदलती सोच, अपने स्वयं के शरीर को लेकर सहज होना तथा अपनी इच्छा को प्राथमिकता देकर अपना सही-गलत को आत्मविश्वास के साथ तय करना 21वीं सदी की नारी की चेतना है |

संदर्भ -

1. गोगिया, ज्योति. 21वीं शती का नारी-विमर्श. (सं) सुबीर, पंकज. विमर्श दृष्टि (सुधा ओम ढींगरा का साहित्य). सीहोर: शिवना प्रकाशन, 2019. पृ० - 141
2. डॉ॰ अमिता. *नक्काशीदार कैबिनेट : नारी संघर्ष की एक सजीव गाथा.* (सं) सुबीर, पंकज. विमर्श - नक्काशीदार कैबिनेट. सीहोर: शिवना प्रकाशन, 2018. पृ॰ - 42
3. गुप्ता, रेणु. *हिंदी लेखिकाओं की कहानियों में नारी.* दिल्ली: अभिरुचि प्रकाशन, 1995.
4. ढींगरा, सुधा ओम. *नक्काशीदार कैबिनेट.* सीहोर : शिवना प्रकाशन, 2018. पृ॰ - 81
5. वही. पृ॰ - 81
6. वही. पृ॰ - 9
7. वही. पृ॰ - 24
8. राशि, मौर्य.,कुकरेती,नुपूर.(सं).*"मानव विकास रिपोर्ट".* सुरक्षा के दायरे भाग-1.छतरपुर: सहयोगी ट्रस्ट.
9. ढींगरा, सुधा ओम. *नक्काशीदार कैबिनेट.* सीहोर : शिवना प्रकाशन, 2018. पृ॰ - 108